इसलिए भी इसे पिछड़ी अर्थव्यवस्था माना गया।

(4) **गतिहीन या सुस्त अर्थव्यवस्था** – गतिहीन अर्थव्यवस्था को ही सुस्त अर्थव्यवस्था भी कहते हैं। गतिहीन या सुस्त अर्थव्यवस्था से अर्थ उस अर्थव्यवस्था से है जिसकी वास्तविक राष्ट्रीय व प्रति व्यक्ति आय प्रायः स्थिर रहती है। इसका अर्थ यह है कि ऐसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन स्थिर रहता है। औद्योगिक विकास नहीं होता है। कृषि का उत्पादन भी स्थिर रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि प्रति व्यक्ति आय स्थिर रहती है। कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन में कोई परिवर्तन नहीं होता है तथा उत्पादन की पुरानी तकनीक ही काम में लाई जाती है। इस से औद्योगिक ढांचा कमजोर रहता है और आधारभूत उद्योगों का विकास नहीं हो पाता।

अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यों होता है? इस गतिहीनता

Scanned with CamScanner

के लिए अनेक कारण रहे हैं जो निम्नलिखित है

(1) ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीतियां — भारत ब्रिटिश सरकार की लम्बी कालोनी थी, इसकी प्रशासनिक नियंत्रण पर था। अतः इनके द्वारा ही भारत के सम्बन्ध में नीतियां बनाई जाती थी। ब्रिटेन की कुछ नीतियों के कारण भारत को लाभ हुआ। जैसे रेल व्यवस्था में सुधार हुआ। परिवहन व संचार सुविधाओं में वृद्धि हुई तथा शहरों का भी विकास हुआ जिससे सभी व्यवस्था में कमी रही।

लेकिन यदि ब्रिटिश शासन की नीतियां उस देश के लिए सौभाग्य पूरक नहीं रहती हैं तो उस देश का विकास नहीं हो पाता। भारत के सम्बन्ध में भी यही हुआ। ब्रिटिश सरकार की नीतियों के कारण भारत का पुराना आर्थिक ढांचा समाप्त हो गया और वह कोई नया आर्थिक ढांचा न बना सका।

(2) कृषि व स्थायी बन्दोबस्त सम्बन्धी नीति — ब्रिटेन की नीति किसानों का स्वामित्व समाप्त कर उन्हें जमींदारों की कृपा पर छोड़ने की रही। प्रारम्भ में केवल कम्पनी किसानों से मालगुजारी वसूल करती रही लेकिन बाद में उसके कार्नवालिस ने स्थायी बन्दोबस्त लागू कर जमींदारों को कृषि का स्वामित्व बना दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो किसान जमींदार को अधिक लगान देता था वही कृषि को जोत कर पैदावार कर सकता था। जिससे काश्तकारों का शोषण जमींदारों ने करना प्रारम्भ कर दिया। अतः पैदावार काश्तकार बढ़ाने से कम होती चली गई। इधर सरकार की माल गुजारी बढ़ती चली गई।

(3) सम्पत्ति का निष्कासन — अंग्रेज भारत से काफी सम्पत्ति व्यापार के रूप में या गृह खर्चों के रूप में ले गये। यदि इसको वे न ले गये होते तो भारत का स्थान औद्योगिक देशों में ऊँचे स्थान पर होता।

(4) औद्योगिक एवं व्यापारिक नीतियां — ब्रिटेन की औद्योगिक एवं व्यापारिक नीतियां इस प्रकार की जिससे कि भारत इंग्लैण्ड की पूरक अर्थव्यवस्था का स्थान ले ले। वे यह चाहते थे कि उनका पक्का या तैयार माल भारत में बिके और भारत उनके लिए कच्चे माल की पूर्ति करे। इसके लिए उन्होंने भारतीय दस्तकारी उद्योगों को नष्ट कर दिया लेकिन भारतीय औद्योगिक विकास के लिए कोई प्रयास नहीं किया। इंग्लैण्ड के औद्योगिक विकास के लिए ब्रिटेन में भारतीय माल पर अधिक शुल्क लगाकर भारतीय वस्तुओं का प्रवेश वहां नामुमकिन कर दिया।

इंग्लैण्ड ने भारतीय उद्योग के विकास के लिए सद्भावपूर्ण नीति अपनाई। और माल खरीदने के लिए इंग्लैण्ड के कारखानों में बने माल को प्राथमिकता दी गई।

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner